P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

"रिसते रिश्ते" उपन्यास : एक अध्ययन

सारांश

समाज को प्रतिष्ठित बनाने के लिये मानव मूल्यों के प्रति हमें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि आज के युग में हम निरन्तर जीवन मूल्य विघटित होते देख रहे हैं जिससे मानव का अंतःकरण झकझोर रहा है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तथा महत्वाकांक्षाओं की तीव्र आंधी आदि कारणों से आदर्श एवं मूल्य दिन–प्रति–दिन विघटित हो रहे हैं। रक्त सम्बन्धों में विघटन पीढ़ी अंतर जनरेशन गैप के कारण होता है। धन एवं पढ़ाई के सामने व्यक्ति का मूल्य नहीं। माँ की ममता, पिता का सम्मान तथा भाई–बहनों का आपसी प्रेम लुप्त हो गया है। आज स्वार्थ, धन–लोलुपता तथा अहम जैसे विभिन्न कुप्रवृत्तियों के कारण पारिवारिक सम्बन्धों मे विघटन की स्थिति निरन्तर उत्पन्न हो रही है।यह एक घर की कहानी नहीं बल्कि घर–घर तथा सम्पूर्ण समाज की कथा व्यथा है जिससे मानव विशेष तौर पर आज का वृद्ध चिन्तित है।

मुख्य शब्द : डॉ. राजबीर सिंह धनखंड, रिसते रिश्ते।

रूबी जुत्शी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

प्रस्तावना

डॉ. राजबीर सिंह धनखंड हरियाणी नाटककार ही नहीं बल्कि एक जाने माने उपन्यासकार भी हैं चाल जमाने की, किस्मत का खेल, चाह चौधर की, चकाचौध, भूल की थप्पड़, निर्मला, बेटी, रिसते कैसे कैसे एवं रिसते–रिश्ते आदि हैं। सन 2011 में "रिसते रिश्ते'' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ हैं ।

किसान मौजी को आय कम और व्यय अधिक होने के कारण कभी–कभी बनिये से उधार लेकर अपने परिवार को चलाना पड़ता हैं परन्तु सभी परिवार जन मान–सम्मान तथा प्यार से रहते थे। इस पूरे परिवार में सूरज ही एकमात्र साक्षर होने के कारण भाग्य से फौज में भर्ती होता है। जिस दिन डाकिया इसका आर्डर लेकर आता है उस दिन यह नियमित रूप से ज्वार के चारे का घट्ठा लेने खेत पर गया हुआ था क्योंकि खेती–बाड़ी ही इनका साधन था ।

निरक्षर परिवार में जब डाकिया पिता के हाथ में लिफाफा देकर गया तो पिताजी की उत्सुकता तीव्र होती गई–"मौजी चिट्ठी को पढ़वाने की इतनी ललक थी कि सूरज को घर पहुँचने से पहले ही रास्ते में वह चिट्ठी सूरज को पढ़ने के लिए दे दी।"[1]

पहले परिवार में एक– आध सदस्य शिक्षित होता था और उसके इर्द–गिर्द पूरा परिवार घूमता रहता था जिससे रिश्ते समीप आते थे कि दूर चले जाते थे। समय बदल गया प्रत्येक सदस्य शिक्षित होने के कारण किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहा हैं और न ही वे अपनी बड़ी या छोटी खुशी आपस में मिल बांट कर मनाते हैं क्योंकि नई पीढ़ी अपने में सक्षम हैं।

उन दिनों केवल रिश्तों का ही महत्व नहीं था बल्कि ईश्वर पर भी घोर आस्था होती थी। घर के किसी भी काम के लिए मन्नत रखते थे। चाहे वह कितने ही दरिद्र क्यों नहीं होते थे। सूरज की माँ भी बेटे की नौकरी के लिए सवा पांच रुपए का प्रसाद बाँटने की मन्नत रखी थी किन्तु अपनी निर्धनता के कारण –"मेरे पास कहाँ से आये पैसे? तुझे पता तो है कि हम गरीबी में तो मरने लग रहे हैं तू ऐसा कर बनिये से उधार ले आ सामान"[2] तब लोगों के मन में ईश्वर के प्रति आस्था थी, आज आस्था का स्थान बुद्धि ने ले लिया है जिससे नयी पीढ़ी ईश्वर से दूर होती जा रही हैं।

समाज में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है लाखों देकर भी उनका पेट नहीं भरता है। पुरानी पीढ़ी के अफसर एक शराब की बोतल लेकर कोई भी काम करने के लिए तत्पर होते थे। सूरज फौजी कैंटीन से दो बोतले शराब की लाकर बेलदार को रिश्वत के रूप देता है और नहर में पाइप लगाकर पानी की चोरी करता हैं। ज्वार के बदले जमीन में गेहूँ की फसल लगाकर अपनी किस्मत बदल देता है– "मौजी के खेत में फसल पहले की अपेक्षा दुगनी पैदा हुई। धीरे–धीरे मौजी की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी।" [3]

भारतीय समाज की कुछ परम्पराएँ ऐसी बनी हैं जब ही हमारे बच्चे छोटी–बड़ी नौकरी करने लगते हैं तो माता–पिता को उनके विवाह की चिंता लगी रहती हैं। सूरज के साथ भी यही होता है। मौजी अपने सावले सूरज के लिए एक सुन्दर लड़की चाहता है। कई लड़कियों को नापसंद करके कमला नामक लड़की पर इनकी सुई रुक जाती है। कमला रामसिंह की बड़ी बेटी है जो अत्यंत सुन्दर एवं सुशील है। सूरज तथा कमला विवाह के सूत्र में बंध जाते हैं। जब फौजी सूरज की छुट्टियाँ समाप्त होती है तो वह अपनी नौकरी पर जाने की तैयारी करने लगता है, तो सासू माँ दामाद के प्रति एक षड़यंत्र रचती है और नासमझ बेटी के माध्यम से सफल भी होती हैं। जब "सूरज तुझे साथ ले जाने से इंकार कर देगा" तब देना भगतनी की दवाई –"दवाई उसने दी तो है बहुत महंगी थी। एक पुड़िया के सौ रूपये लिए है ..... यदि घर वाला अपने वश में करना हो तो ये एक ही पुड़िया काफी है।"[4] अनजान कमला अपनी माँ की बात मानकर जहर की पुड़िया अपने पति को दे देती है जिससे रात भर उसके पति की दुर्दशा होती है उसको संभाल न पाकर पोह फटने से पहले ही रोते–रोते मायके चली जाती है और अपने सासू–माँ के प्रति कई आरोप लगाती हैं जिससे कमला के भाई एवं पिता में रोष पैदा हो जाता है और जब सूरज कमला को लेने के लिए अपने ससुराल जाता है तो वहां अपने दामाद की एक बात न सुनकर,पंचायत वालो की बात मानकर तथा सीधी सूरज के यूनिट के अफसर तक शिकायत दर्ज करवाके ही कमला को पंचायत वालो के साथ ससुराल भेज देते है।

सासू माँ पर लगाया आरोप अब सच सिद्ध होता है जब इसकी सास इस पर घोर अन्याय करती है। गर्भवती कमला को खाने पीने पर रोक लगाती हैं और न चाहते हुए नौवे महीने खेत में से खरपतवार निकालने के लिए ले जाती है और खेत में तड़प–तड़प कर बेटे को जन्म देती हैं–"ले देखती हूँ यदि काम चल गया तो... बाहर खींचकर ले बच्चा तो हो गया पर इस बच्चे की नाल काटने के लिए कोई चीज पकड़ा दे। यहाँ तो दरांती रखी हैं।" [5] जंग लगी दरांती से संक्रमण के कारण बच्चा मर जाता है, और कमला की दशा दिन–प्रतिदिन बिगडती चली जाती हैं "ऐसा करो तुम खून नहीं देना चाहते तब इस मरीज को ले जाओ लो इसकी ये छुट्टी कर दी"[6] कमला को भतेरी घर ले आई। इन्फेक्शन हर रोज बढ़ता ही चला गया। कमला दस दिनों तक तड़पती रही दवाई तथा रक्त न मिलने के कारण उसकी अकाल मृत्यु हो जाती हैं। इन दिनों सूरज फौजी की पोस्टिंग फाजिल्का की एक चौकी पर होती हैं जहा पाकिस्तान अपना कब्जा कर चुका था। देश को बचाते–बचाते परिवार {पत्नी तथा बच्चे} से हाथ धोना पड़ता हैं। पर किसी भी सगे पर आरोप नहीं लगाता हैं जबकि वो इस बात से परिचित था कि उनकी माँ का पूरा पूरा हाथ है। कुल मिलाकर प्रत्येक फौजी को अपने माता–पिता का शत प्रतिशत सहयोग होना चाहिए तब उसका अपना परिवार प्रसन्नता से जी सकता वरना इनके परिवार की बेमौत मृत्यु हो जाती हैं।

विधुर सूरज फौजी का सदाचारी स्वभाव देखकर न चाहते हुए भी चौधरी रामसिंह अपनी दूसरी बेटी निर्मला जो सूरज से छोटी भी होती है का विवाह सूरज से करता है केवल शर्त इतनी ही है कि वो उसको अपने साथ ले जाएँ निर्मला विद्रोही स्वभाव की थी। वह कभी भी सासू माँ की साथ रहने को तैयार नहीं थी।" मैं तो पहले से ही यह ठान चुका हूँ कि निर्मला को अपने पास रखूँगा, उसको एक दिन भी अपने घर पर नहीं छोडूँगा। मैं तो कमला को ही घर पर छोडकर पाश्चाताप कर रहा हूँ। मेरे को यह पक्का विश्वास हैं कि भाई मैं उसको अपने घर पर नहीं छोड़ता तो उसकी मृत्यु नहीं होती। वे दोनों माँ–बेटा बिना सम्भाल के मरे हैं"। [7] नायक माता के रिश्ते को रिसते देखकर दूसरी पत्नी निर्मला को ससुराल का दरवाजा भी न दिखाकर सीधे ही अपने साथ ले जाता हैं और कुछ दिनों के पश्चात ही सूरज के यूनिट के परिवार वालों के खेल आरम्भ हुए और निर्मला निरंतर भाग लेती रही और सतत प्रथम भी आती रही। इसी अंतराल में एक के बाद एक बच्चे को जन्म देती रही और चार बच्चो की माँ बनते ही उसकी खेलों की महारत दिन–प्रतिदिन लुप्त होती गई लेकिन यहीं योग्यता उसकी बड़ी बेटी में त्रीव गति से परिलक्षित होती गई। सन् 1971 में जब भारत और पाकिस्तान की पुनः जंग हुई तो अम्बाला की सीमा से भारतीय फौजी पाकिस्तान में घुस कर बहुत बड़े क्षेत्र को अपने कब्जे में कर लेते है। जिससे सूरज नायक से हवालदार बन जाता है। सूरज का मानना हैं " कोई भी लड़की किसी का कुछ नही ले जाती हैं। सब कुछ अपनी किस्मत का ले जाती हैं। यह लड़की भी अपनी किस्मत को लेकर पैदा हुई हैं । हो सकता हैं इसकी किस्मत से हमारे भी भाग्य खुल जाए। अब से पहले कौन सा तुझे इतनी ज़्यादा लड़कियाँ हो गयी, केवल दो ही तो लडकियाँ हुई हैं। [8]

आर्थिक सम्पन्नता के कारण चारों बच्चो की पढ़ाई प्रतिष्ठत पाठशाला में होती हैं। बड़ी बेटी लक्ष्मी पढ़ाई के साथ–साथ माँ के भांति खेल–कूद में भी निपुण होती हैं क्योंकि उसकी प्रेरणा स्त्रोत अपनी ही माँ थी। सन् 1977 में जब हरियाणा में अनेक क्षेत्र बाढ़ग्रस्त हुए तो इस चपेट में सूरज के घरवाले भी आ जाते हैं। सूरज अपने माता–पिता को घर लाना चाहता है परन्तु पत्नी एकदम विरोध करके कहती हैं–"यदि आप अपने माता–पिता को यहाँ ले आओगे, इधर से इन बच्चों के पेपर चल रहे हैं"।[9] माता पिता अर्थात दादा–दादी से ज्यादा महत्वपूर्ण बच्चो की पढाई है। खूनी रिश्ते जाए बाढ़ में भविष्य कि चिंता में माँ–बाप के प्रति आँखें मूदकर भी चल सकते हैं जब पिता जी थोड़े से रुपए उधार माँगते हैं तो सूरज बिल्कुल इंकार कर लेता हैं –"इस तरह से बाँटता रहा तब मेरा खर्चा कैसे चलेगा"?[10] जब इनकी बेटी लक्ष्मी दसवीं में पढ़ रही थी तो रामकृष्ण नामक बिचौलिया बनकर रिश्ता लेकर आता है तब लक्ष्मी केवल सोलह वर्ष की होती है। चरित्रहीन एवं स्वार्थी डॉक्टर दहेज ऐठने के लिए इस मासूम युवती की भावनाओं के साथ खेलकर शादी तो कर लेता है किन्तु रिश्ता निभाने से कोसों दूर रहता है –"थकने के बाद नींद आ जाती है तुम्हारे से बात किस वक्त करूँ।"[11] परन्तु घर में रहने वाले किरायदार बूढी औरत और उसकी लड़कियों को डार्लिंग–डार्लिंग करते रहते है। लक्ष्मी मानसिक और

शारीरिक अत्याचार सहती रही पर पति के डर से कभी भी माँ–बाप को दूरभाष के माध्यम से परिचित न करा सकी। जब तक वह अपनी जेठानी के साथ एक मुसाफिर की भांति अपने ससुराल अर्थात् गाँव नही गई तब तक सहती रही। इतना कुछ सहने के उपरांत भी जब उनका बाप उसको मायके लेने आता है तो वह पहले "नेग न दिया तब ये मेरे बारे में क्या सोचेगे। दीपक ने तो मैं खाली हाथ भेजते हुए शर्म नहीं आई।" [12]

मायके में भी वह अपने माता–पिता के सामने खुलती नहीं किन्तु माता–पिता बड़े अनुभवी होते हैं उन्हें इस बात की भनक लग जाती हैं वह बेटी को अपने सामने दीपक के साथ बात करने पर विवश करते है किन्तु वहाँ से वह स्पष्ट शब्दों में कहता है न वो उसको पैसे देगा न ही अपने साथ ही रखेगा क्योंकि "मेरी शादी तो हमारे घरवालो ने जबरदस्ती तुम्हारे साथ की हैं। मैं तुम्हारे से प्यार नहीं करता तब तुझे लेने क्यों आऊँ। मैं तो पहले से ही कल्पना से प्यार करता हूँ वही है मेरी जो भी हैं मेरी तरफ से चाहे तुम कहीं जाओ।" [13] लक्ष्मी पति के द्वारा दिए कष्टों को चुपचाप सहती है क्योंकि अपने माँ–बाप को न दुखी देखना चाहती है न ही दुःख देना चाहती थी क्योंकि माता–पिता आखिर माता–पिता ही होते हैं। वह अपने सम्मान की चिन्ता न करके बेटी के भाग्य को दोषी मानकर घर में ही रखते है। "देख अब इस लड़की ने किस्मत ही इतनी माड़ी लिखवा रखी है तो बता निर्मला हम इसमें क्या कर सकते हैं? मैंने तो इसकी शादी में अपनी हैसियत से अधिक पैसा खर्च किया है।" [14] लक्ष्मी आत्महत्या करने के लिए तैयार होती है लेकिन दीपक के पास नहीं जाती है। लड़की का फैसला सुन कर सूरज अपने पिताजी, साले साहब तथा अन्य बड़े लोगो से परामर्श लेकर अपनी बेटी को अपने पास रखने का निर्णय करता हैं फिर पंचायत लगा कर दीपक से साढ़ें तीन लाख रुपए प्राप्त कर लेता है। इससे इनके माता पिता को सीख मिलती हैं जब तक दूसरी बेटी दीपिका अपने पाँव पर खड़ी नही हो जाएँगी तब तक वह उसकी शादी नहीं करेगे। दीपिका को इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांच में N-I-T कुरुक्षेत्र में दाखिला मिल गया और बड़ी लगन के साथ पढ़ने के कारण तीन लाख प्रति वर्ष पैकेज की नौकरी भी लग गई। इसी कम्पनी में इसका एक साल सीनियर हेनरी जौसफ नामक एक लड़का भी काम कर रहा था। स्वभाव के नरम होने के कारण दीपिका उसके प्रति मोहित हो जाती है और वो भी दीपिका के प्रति आकर्षित होता है। समान जाति और धर्म के न होते हुए भी वह जोसफ हेनरी से विवाह कर लेती है और अपने माता पिता से गाड़ी की मांग भी करती है जो माँ–बाप दे नहीं सकते हैं दोनों इस शर्त को आगे लेकर चलते हैं कि दोनों अपने–अपने धर्म को निभाते रहेगे और दोनों धर्मों के त्योहारों को भी शान–बान के साथ मनाएगें। दीपिका अपनी बड़ी बहन लक्ष्मी से एकदम भिन्न थी,जहाँ लक्ष्मी बड़ी ही सहनशील है वही दीपिका एकदम विद्रोही। एक तो अंतरजातीय विवाह करती है ऊपर से माँ–बाप से विद्रोह करके,अधिकार से गाड़ी की माँग करके पिता के आर्थिक अभावता से बिना सहयोग के शादी पर गाड़ी लेने में सक्षम रहती है। विदाई का जरा भी दुःख न देखकर दादी कहती हैं– "हमारे समय में तो हमारे आंसू रोकने से भी नहीं रुकते थे हमें तो ऐसा लगता था कि कोई हमें कुएँ–झेरे में डालकर आ रहा है।" [15] जिस भाँति लेखिका ने दो बहनों के माध्यम से दो महिला चरित्र दिखाएं हैं उसी प्रकार दीपक एवं संदीप के माध्यम से दो पुरुष चरित्र भी दिखाएं हैं दोनों अच्छे पति एवं बुरे पति के रूप में अपनी भूमिका उपन्यास में निभा रहे हैं। संदीप पहले से दहेज के विरुद्ध हैं और ठुकराई और दुत्कारी हुए लड़की के साथ विवाह करने के पक्ष में हैं –"मैं शादी बिना किसी दहेज के करूँगा। जहाँ तक लड़की को छोड़ने का प्रश्न है। मैंने अपनी खुशियों को ध्यान में रखकर ही इस लड़की के साथ रिश्ता करवाने का फैसला किया हैं जबकि परिवार वाले नाराज ही होते हैं कि छोड़ी हुई लड़की के साथ कुवारे लडके को शादी करने का क्या तुक हैं छोड़ी हुई लड़की हैं तब समाज में तो दाग हैं।" [16] फिर भी किसी की बात न सुनकर शादी कर ही लेता हैं, किन्तु संदीप के अन्दर सभी गुण होते हुए भी शराबी होने के कारण इसकी जिंदगी अपंग जैसे हो गयी थी। पत्नी को हर प्रकार की सुविधा देकर अपने आपको काम करने से बचाता रहा। लक्ष्मी के पिताजी फौजी सूरज सेवानिवृत होने के तत्पश्चात दूध बेचने का काम करने लगता और अचानक एक हादसे से इनकी टाँग टूट जाती हैं और घर का कारोबार रुक जाता हैं क्योंकि उसकी पत्नी दूध बेचने से इंकार करती है। चौधरी नामक व्यक्ति को सूरज हजार रूपए महीने का वेतन देकर व्यापार को थमने नहीं देता हैं। इस बीच लक्ष्मी भी अपने बाँप को देखने आती है इसी अंतराल में उनके सास–ससुर शराबी बेटे को फुसलाकर लक्ष्मी के कपड़े के दुकान को बेच डालते हैं और गाँव में रहने का सलाह देते हैं किन्तु लक्ष्मी मायके से आते ही घर में कोहराम मचा देती है। संदीप अधिक मात्रा में शराब पीने के कारण हाट–अटैक का शिकार होता और लक्ष्मी को पुनः विधवा का जीवन व्यतीत करना पड़ता है पर ससुराल वाले इसका पुनर–विवाह करना चाहते है किन्तु असफल रहते हैं–"हम पर न तो इंकार करने की बुराई आयेगी और बहू का उस लड़के ओमप्रकाश के साथ लगाने से भी इंकार हो जायेगा ।" [17]

त्रासदी तो इस बात की है कि शादी तो टल गई पर रामकिशन नामक ससुरजी लक्ष्मी के साथ अपने सम्बन्ध बनाने का प्रस्ताव रखता है क्योंकि वह सम्पति और बुढ़ापे के लिए वारिस चाहता है, जो उसकी बूढ़ी पत्नी देने से इंकार करती है –"इस आयु में बच्चा देना उसके लिए असंभव हैं आप और ज्यादा दूध खा पी लिया करो। मैं कौनसा कमजोर हूँ। मैं एक नहीं दो–दो बहूओं को रख सकता हूँ।" [18]

पिता समान ससुरजी का प्रस्ताव रखकर बहु लक्ष्मी के शरीर में आग लग जाती है और उसके प्रति विद्रोह में तरह–तरह के अपशब्द कह देती है। "इस तरह की बात कहते समय आपके मुहँ में कीड़े क्यों नहीं पड़े। यदि आप बहू के ज्यादा ही भूखे हैं तो कर लो दूसरा विवाह।" [19] यह इस बात को पंचायत के सामने रखना चाहती हैं किन्तु उस समय इसके भाई महेश की शादी की बात चल रही थी और इसकी माताजी लड़की वालो से गाड़ी की मांग कर रही थी क्योंकि लक्ष्मी की छोटी

बहन ने भी अपने माता–पिता से आर्थिक–विषमता में भी गाड़ी बड़े ही हक से मांगी थी किन्तु यह इच्छा माँ के दिल में ही रही। महेश अपने ही गोत्र की लड़की से पंचायत के न मानने पर भी पिता जी एवं सुशीला के सहयोग से विवाह कर लेता है :–" मैं यहाँ महेश की बहू बनकर आई हूँ। यह पंचायत कौन हैं हमें भाई बहन बनाने वाली ..... जो सच्ची बात थी वो मेरे ससुर जी ने पंचायत को पहले ही बता दी।" [20] फिर भी पंचायत को बात मनवाकर जब दोनों का विवाह भली–भांति होता है तो सूरज के घर में दीवाली जैसे वातावरण उत्पन्न होता है इसी बीच विधवा लक्ष्मी भी निजी सहायक के पद पर कालेज में नियुक्त होती है और वहां एक विधुर मास्टर जी से शादी कर लेती जो पन्द्रह वर्ष बड़ा था किन्तु बेमेल विवाह कभी–कभी सफल रहता है,इनका भी विवाह सफल रहा और दो शादियों के पश्चात् अब माँ बनने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों भाई–बहन की शादी एक ही समय पर होने के कारण महेश तथा उसकी बहन को पुत्र प्राप्ति होती हैं सूरज–निर्मल दादा–दादी, नाना–नानी बनने पर फूले न समाते हैं–" किस्मत के खेल भी निराले हैं। कभी–कभी तो किस्मत इतना दुःख दे देती है कि उस दुःख की कोई सीमा ही नहीं होती। कभी–कभी इतनी खुशियाँ दे देती हैं कि वे भी अपार होती हैं।" [21]

लक्ष्मी ने एक पैसा भी दहेज में नहीं लिया था इसलिए माता–पिता लक्ष्मी को दिल खोलकर पीलिया ले जाते है। इसी बीच उनको एक बुरी खबर मिलती हैं छोटे बेटे ने अमेरिका की एक लड़की से शादी करके वहाँ की नागरिकता लेकर अपनी जिंदगी वहां बसाने का निर्णय ले लिया है और उसने अपने माँ–बाप से टेलीफोन पर बात करना भी बंद कर दिया हैं।बड़े लड़के ने साफ शब्दों में पहले ही कहा था – "मुझे तथा सुशीला को अच्छे पैसे मिलते हैं हमारा गुजारा अच्छी तरह से चलेगा... इनके खर्च की हमारी कोई सर दर्दी नहीं।" [22] और माँ–बाप से कन्नी काट ली।

माँ–बाप चाहे वह सूरज के हो या स्वयं सूरज तथा निर्मला पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता है, जैसे निर्मला और सूरज को अपने समय में माँ–बाप से अर्थात सास–ससुर से मिलने का समय नहीं मिलता था आज वैसे ही सूरज और निर्मला के चार बच्चो को भी समय नहीं मिलता है। रिश्तों को रिसते देखकर निर्मला पति का साहस बांध लेती हैः– " आप इतने दुखी क्यों हो रहे हैं । आजकल सारा का सारा माहौल ही ऐसा बुना हुआ हैं। ये केवल हमारे साथ ही नहीं हो रहा सभी माता–पिता ऐसे ही दुखी हैं।" [23]

हम बुजुर्ग पेंशन को ही आज अपना सहारा मानकर चलते हैं इस युग के लड़के ही स्वार्थी नहीं हैं बल्कि लड़कियां भी लडकों से अधिक धन के पीछे भागती–फिरती हैं क्योंकि समाज में केवल पैसा बोलता हैं न कि खूनी रिश्ता। जब सूरज को गुडगाँव वाले फ्लैट में तीस लाख रुपए आते हैं तो दोनों बहने पंद्रह तारीख को ही पिता जी के घर जाती हैं – "पिता जी हमें माफ कर देना हमें आपसे मिलने का समय ही नही मिल पाया।"[24]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत उपन्यास पिछड़े गाँव के एक छोटे से परिवार जिसमें किसान मौजी उसकी पत्नी भतेरी, ज्येष्ठ पुत्र सूरज तथा अनुज गोपाल से आरम्भ होकर समाज में व्याप्त कई जीवन्त त्रासदियों को दिखाने में सफल सिद्ध हुआ हैं।

निष्कर्ष

आज के बच्चों के लिए माता–पिता भगवान् नहीं बल्कि ए.टी.एम मशीन हैं । नई पीढ़ी बहुत समझदार हो रही हैं। वे टूटे बर्तन,टूटे–मेज–कुर्सी की भांति वृद्ध माता–पिता या सास–ससुर को एक अलग–थलग कोने में लगाने में अपने भविष्य की बेहतरी समझते हैं। वर्तमान पीढ़ी रिश्तों को न निभाते हुए केवल धन–राशि की सीढ़ी पर चढ़कर अपनी मंजिल को पाना चाहते हैं । इस तरह उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता शत–प्रतिशत सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –10*
2. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –11*
3. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –25*
4. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –35*
5. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –53*
6. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –54,55*
7. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –63*
8. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –74*
9. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –78*
10. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –83*
11. *डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –95*

12. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –98
13. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –100
14. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –102
15. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –127
16. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –136,137
17. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –157
18. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –157
19. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –158
20. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –163
21. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –165
22. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –165
23. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ – 166
24. डॉ० राजबीर सिंह धनखंड: उपन्यास, रिसते रिश्ते, 2011 प्रकाशक–अमर प्रकाशन, लोनी गाजियाबाद, उ.प्र., पृष्ठ –168